अध्याय
08

किसान जमींदार और राज्य

कृषि समाज और मुगल साम्राज्य
(लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

कृषि समाज और मुगल साम्राज्य

(लगभग 16 वीं-17वीं सदी)

परिचय:-

16वीं-17वीं सदी के दौरान हिंदुस्तान में लगभग 85 फ़ीसदी लोग गांव में रहते थे।

इस समय कई बाहरी ताकते भी ग्रामीण दुनिया में दाखिल हुई इनमें सबसे महत्वपूर्ण मुगल राज्य था।

किसान अपने कई फसलें बिक्री के लिए उगाई करती थी इसलिए व्यापार, मुद्रा और बाजार भी गांव में घुस आएं और इससे खेती वाले इलाके शहर से जुड़ गए।

किसान और कृषि उत्पादन

किसान और कृषि उत्पादन

खेतिहर समाज की बुनियादी इकाई गांव थी।भूखंड का एक बहुत बड़ा हिस्सा जंगलों से घिरा हुआ था।

ऐतिहासिक स्रोतों में सबसे महत्वपूर्ण था आइन-ए- अकबरी जिसे अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने लिखा था इसमें किसानों द्वारा खेत जुताई, राज्य के नुमाइंदो द्वारा करो की उगाही,किसान और जमींदार के बीच संबंध इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है।

इसके अलावा 17वीं और18वीं सदी के गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान में मिलने वाले दस्तावेज हैं और ईस्ट इंडिया कंपनी के बहुत सारे दस्तावेज शामिल है।

किसान और उनकी जीवनी

मुगल काल में किसान के लिए रैयत या मुजारियन शब्द का इस्तेमाल करते थे इसके अलावा किसान के लिए आसामी शब्द भी मिलता हैं।

© JCERT not to be republished

किसान दो तरह के होते थे। एक-खुद-काश्त के गांव में रहते थे खुद अपने जमीन पर खेती करते थे दूसरी- पाही-काश्त जो दूसरे गांव में ठेके पर खेती करने आते थे।गुजरात में जिन किसानों के 6 एकड़ जमीन होती थी वे संपन्न माने जाते थे।

सिंचाई और तकनीक

किसानों की गतिशीलता की वजह से कृषि का लगातार विस्तार हुआ। मानसून भारतीय किसान की रीढ़ थी। जिन इलाकों में प्रतिवर्ष 40 इंच य या उससे ज्यादा बारिश होती थी वहां कमोबेश चावल की खेती होती थी कम बारिश वाले इलाकों में गेहूं,ज्वार बाजरे की खेती ज्यादा होती थी।

बाबरनामा (बाबर की आत्मकथा)जो तुर्की भाषा में लिखा गया इसमें सिंचाई के उपकरणों के बारे में लिखा गया है। सिंचाई के कार्यों में राज्य की मदद मिलती थी। राज्य ने कई पुरानी नहरों की मरम्मत करवाई।शाहजहां के शासन काल के दौरान पंजाब में शाह-नहर बनवाई गई।

फसलों की भरमार

आइन-ए-अकबरी हमें बताती है कि दोनों मौसम मिलाकर खरीफ और रबी मुगल प्रांत आगरा में 39 किस्म की फसलें उगाई जाती थी।

जबकि दिल्ली प्रांत में 43 किस्म की फसलें उगाई जाती थी बंगाल में सिर्फ चावल की 50 किस्में पैदा होती थी

ग्रामीण समुदाय

ग्रामीण समुदाय

इस ग्रामीण समुदाय के तीन घटक है खेतिहर किसान, पंचायत और गांव का मुखिया (मुकद्दमा या मंडल)

जाति और ग्रामीण माहौल-जाति और अन्य जाति जैसे-भेदभाव की वजह से खेतिहर किसान कई तरह के समूह में बँटे थे। गांव की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसे समूहों का था जिसके पास संसाधन कम है और ये जाति व्यवस्था की पाबंदियों से बँधे थे।

मुसलमान में हलालखोरान गांव के बाहर रहते थे। बिहार के मल्लाहज़ादाओ (नाविक के पुत्र) की तुलना दासों से की जाती थी। 17वीं शताब्दी में मारवाड़ में लिखी गई एक पुस्तक राजपूतों की चर्चा किसानों के रूप में करती है।

पंचायतें और मुखिया

© JCERT not to be republished

गांव की पंचायत में बुजुर्ग लोग होते हैं जिनके पास पुश्तैनी संपत्ति होती थी। इसमें कई जातियों के लोग रहते थे पंचायत का फैसला सभी लोगों को मानना पड़ता था।

पंचायत का सरदार मुखिया होता था जिसे मुकद्दम या मंडल कहते हैं।गांव की आमदनी और खर्चे का हिसाब किताब अपनी निगरानी में बनवाना इसमें पंचायत का पटवारी उसकी मदद करता था।

जाति की अवहेलना रोकने के लिए लोग के आचरण पर नजर रखना गांव के मुखिया की जिम्मेवारी था। अत्यधिक कर की मांगो के मामले में पंचायत अक्सर समझौते का सुझाव देती थी जहां समझौते नहीं हो पाते किसान गाँव छोडकर चले जाते।

ग्रामीण दस्तकार

गांव में में दस्तकार अच्छी तादाद में रहते थे। कहीं-कहीं कुल घरों के 25 प्रतिशत घर दस्तकार के थे किसान और दस्तकार की बीच फक´ करना मुश्किल था कई ऐसे लोग थे जो किसान भी थे और दस्तकार के भी काम करते थे।

महाराष्ट्र में ऐसी जमीन दस्तकारों का मिरास या वतन बन गई।जिस पर दस्तकारों का पुश्तैनी अधिकार था। बंगाल के जमींदार उनकी सेवाओं के बदले लोहारों, बढई और सुनारों तक को रोज का भत्ता और खाने के लिए नगदी देते थे।

एक छोटा गणराज

19 वीं सदी में कुछ अंग्रेज अफसर ने भारतीय गाँवों को एक छोटे गणराज्य के रूप में देखा जहां लोग सामूहिक स्तर पर भाई-चारे के साथ संसाधनों और श्रम का बंटवारा करते थे।जाति और जेंडर (समाजिक लिंग)के आधार पर समाज में गहरी विषमताएँ मत थी

फ्रांसीसी यात्री ज्यां बैप्टिस्ट ट्रैवनियर ने उल्लेख किया कि भारत में वे गाँव बहुत ही छोटे कहे जाएंगे जिनमें मुद्रा की फेर- बदल करने वाले सराफा ना हो।

कृषि समाज और महिलाएं

कृषि समाज और महिलाएँ

उत्पादन की प्रक्रिया में महिलाएं भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेत में काम करती थी।सूत काटने बर्त्तन बनाने के लिए, मिट्टी को साफ करने गुथँने और कपड़ों की कढाई जैसे दस्तकारी के काम उत्पादन में ऐसे पहलू थे जो महिलाओं के श्रम पर निर्भर थे।

तलाकशुदा और विधवा महिलाएं दोनों कानूनन शादी कर सकती थी।शादीशुदा महिलाएं की कमी थी क्योंकि कुपोषण बार-बार माँ बनने और प्रसव के समय मौत की वजह से मृत्यु दर अधिक थी। राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र आदि इलाकों के दस्तावेज में दरख्वास्त मिली है जिसमें महिलाओं का न्याय और मुआवजे की उम्मीद से ग्राम पंचायत को भेजी थी।

पंजाब में ऐसे उदाहरण मिले हैं जहां महिलाएं (विधवा महिलाएं) भी पुश्तैनी संपत्ति के विक्रेता के रूप में ग्रामीण जमीन के बाजार में सक्रिय हिस्सेदारी रखती थी।

© JCERT not to be republished

जंगल और कबीले

जंगल और कबीले

बसे हुए गाँव से अलावा भी उत्तर-पश्चिमी भारत के विशाल हिस्सों में जंगल या झाड़ियों से घिरे थे।ऐसे इलाके झारखंड सहित पूर्वी भारत,मध्य भारत और उत्तरी क्षेत्र थे।जहाँ औसतन लगभग 40 फ़ीसदी आबादी थी।

जिनका गुजारा जंगल के उत्पादों और शिकार और स्थानांतरीय खेती से होता था।

जंगल में घुसपैठ

जंगल में बाहरी ताकते कई तरह से घुसती थी राज्य की सेना के लिए हाथियों की जरूरत थी इसीलिए जंगल वासियों से भी ली जाने वाली पेशकश में हाथी भी शामिल होते थे।

अवध सूबे के मैदानी और पहाड़ी कबीलों की बीच लेनदेन की बारें अबुल फजल ने चर्चा की है।वाणिज्यिक खेती ने जंगलवासियों की जिंदगी पर असर डाला है।

पंजाब का लोहानी कबीला भारत औरअफगानिस्तान के बीच होने वाले जमीनी व्यापार में लगे थे।

अहोम राजाओं की अपने पायक होते थे जिसको जमीन के बदले सैनिक सेवा देनी पड़ती थी। अहोम राजाओं ने जंगली हाथी पकड़ने पर अपना एकाधिकार का ऐलान भी कर रखा था।

नए बसे हुए इलाकों के खेतिहर समुदायों ने जिस तरह धीरे-धीरे इस्लाम को अपनाया उसमे सूफी संतों ने एक बड़ी भूमिका अदा की थी।

जमींदार

जमींदार

वे थे जो अपनी भूमि के मालिक होते थे और जिन्हें ग्रामीण समाज में ऊंची हैसियत की वजह से कुछ खास सामाजिक और आर्थिक सुविधाएं मिली हुई थी।

जमींदार के पास व्यक्तिगत जमीन होती थी इन्हें मिलकियत कहते थे इस जमीन पर दिहाड़ी के मजदूर काम करते थे इन जमीनों को जमींदार बेच या गिरवी रख सकते थे।

जमींदार को पुख्ता करने की कई तरीके थे।नयी जमीनों को बसाकर, अधिकारों के हस्तांतरण के जरिए राज्य के आदेश से और खरीद कर। परिवार या वंश आधारित जमींदारों को पुख्ता होने का मौका मिला है,विशेषकर राजपूतों और जाटों में।

जमींदारी की खरीद-फरोख्त से गांवो में मैद्रीकरण की प्रक्रिया में तेजी आई।इसके अलावा जमींदारों ने अपनी मिल्कियत की जमीनों के फसल भी बेचते थे।

फिर भी इसमें कोई शक नहीं कि जमीनदारी करनेवाला तबका था। 17वीं सदी में भारी संख्या में कृषि विद्रोह हुआ और इनमें राज्य के खिलाफ जमींदारों को अक्सर किसानों का समर्थन मिला।

© NCERT not to be republished

भू-राजस्व प्रणाली

भू-राजस्व

भू-राजस्व यानी भूमि से मिलने वाली राजस्व यह मुगल साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद थी राजस्व वसूली के लिए एक प्रशासनिक तंत्र था।

दीवान-जिसके दफ्तर में पूरे राज्य की वित्तीय व्यवस्था की देखरेख की जिम्मेदारी थी।लोगों पर कर निर्धारित से पहले होने वाले उत्पादन के बारे में सूचनाएं एकत्र की गई।

जुती हुई जमीन और जोतने लायक जमीन दोनों की नपाई की गई।अबुल फजल ने ऐसी जमीनों के सभी आंकड़ों को संकलित किया है।

1665 ई०में औरंगजेब ने अपने राजस्व कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि हर गांव की खेतिहरों की संख्या का सालाना हिसाब रखा जाएँ।

मुगल साम्राज्य में अमीन का यह कार्य था कि प्रांतों में राजकीय नियम कानूनों का पालन हो।

अकबर के शासन में भूमि का वर्गीकरण किया गया और हरेक के लिए राजस्व निर्धारित किया गया। 8.पोलज-सालाना खेती, चाचर-जिसमें कुछ समय के लिए खेती को रोक दी जाती थी। चाचीर-3 या 4 वर्षों तक खाली रहती थी और बंजर- वह जमीन है जो 5 या उससे ज्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई हो।

चांदी का बहाव

चांदी का बहाव

मुगल साम्राज्य एशिया उन बड़े साम्राज्य में एक था जो 16वीं -17वीं सदी में सत्ता और संसाधनों पर पकड़ मजबूत बनाने में कामयाब रहे यह साम्राज्य मिंग (चीन) सफावी (ईरान) और ऑटोमन (तुर्की)

खोजी यात्राओं से और नई दुनिया के खुलने से यूरोप के साथ भारत के व्यापार में भारी विस्तार हुआ।

भारत से निर्यात होने वाली वस्तुओं का भुगतान करने के लिए एशिया से भारी मात्रा में चांदी आई अर्थव्यवस्था में मुद्रा संचार और सिक्का ढलाई का विस्तार हुआ।

इटली की एक मुसाफिर जोवान्नी कारेरी, जो लगभग 1690 ई० में भारत आया था, इस बात का सजीव चित्र पेश किया है कि किस तरह चांदी तमाम दुनिया से होकर भारत पहुंचती थी।

© JCERT not to be republished

अबुल फजल की आइन-ए-अकबरी

अबुल फजल की आइन-ए-अकबरी

अकबर के शासन के 42वें वर्ष, 1598 ई० में 5 संशोधनों के बाद, इसे पूरा किया गया।

अकबरनामा जिसे 3 जिल्दों में रचा गया पहली 2 जिल्द में ऐतिहासिक दास्तान पेश की तीसरी जिल्द -आइन-ए- अकबरी,को शाही नियम, कानून के सारांश और साम्राज्य की एक राजपत्र की सूरत में संकलित किया गया।

यह मुगल साम्राज्य के बारे में सूचनाओं की खान है इसमें दरबार प्रशासन और सेना का संगठन राजस्व का स्रोत का वर्णन है।

आइन-ए-अकबरी पांच भागों में संकलन है जिसके पहले तीन भाग प्रशासन का विवरण देते हैं। मंजिल-आबादी के नाम से पहली किताब शाही घर- परिवार और उसके रखरखाव का वर्णन है।

दूसरा भाग,सिपह-आबादी, जिसमें सैनिक,नागरिक और प्रशासन और नौकरों की व्यवस्था के बारे में हैं। 7.तीसरा,मुल्क-आबादी इसमें प्रांतों के वित्तीय पहलुओं तथा राजस्व की दरों के आंकड़े का सूची तथा 12 प्रांतों का बयान देता है।

चौथी और पांचवी भाग में भारत के लोगों के मजहबी साहित्यिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों का वर्णन है।

आइन-ए-अकबरी की सीमा यह है कि इसके संख्यात्मक आंकड़ो में विषमता है।

स्मरणीय तथ्य

16वीं-17वीं सदी के इतिहास जानने का मुख्य स्रोत अबुल फजल द्वारा रचित अकबरनामा है।

मुगल काल में किसान के लिए मुज़रियान शब्द का इस्तेमाल होता था।

तंबाकू भारत में सबसे पहले दक्कन पहुंचा। अकबर और उसके अभिजातों ने 1604 में पहली बार तंबाकू देखा।जहांगीर के समय में तंबाकू पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

आइन-ए-अकबरी पांच भागों में विभाजित है।

बाबर मुगल वंश का संस्थापक था जो दिल्ली सल्तनत के लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को हराकर 1526 में दिल्ली के सत्ता पर काबिज हुआ।

1739 में नादिर शाह भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को लूटा।

1761 में अहमदशाह अब्दाली पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों को हराया।

1765 में बंगाल के नवाब ने दीवानी अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया।

अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह जफर था जिसे अंग्रेजों ने गद्दी से हटाकर रंगून भेज दिया जहां 18 62 में इसकी मृत्यु हो गई।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 16वीं-17वीं सदी के दौरान हिंदुस्तान में लगभग कितने फ़ीसदी लोग गांव में रहते थे।

   a. 70 b. 1. 80

   c. 1.85 d. 1.0

2. आइन-ए-अकबरी के रचयिता कौन है?

   a. 1. अबुल फजल

   b. 1. बीरबल

   c. 1. तान सिंह

   d. 1. गुलबदन बेगम

3. कौन सा मुगल शासक था जिसने तंबाकू पर पाबंदी लगाया था?

   a. 1. अकबर b. 1. जहांगीर

   c. 1. शाहजहां d. 1. औरंगजेब

4. मनसबदारी व्यवस्था की शुरुआत किस शासक ने किया था?

   a. अकबर b. जहांगीर

   c. शाहजहां d. औरंगजेब

5. मुगल वंश का अंतिम शासक कौन था?

   a. अकबर द्वितीय

   b. औरंगजेब

   c. शाहआलम द्वितीय

   d. बहादुर शाह जफर

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न6.मनसबदारी व्यवस्था से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न7.मुगल काल में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न8.16वीं-17वीं सदी के ग्रामीण समुदाय से आप क्या समझते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न9.अकबर काल में भूमि के वर्गीकरण पर प्रकाश डालें।

प्रश्न10.अबुल फजल की आइन-ए- अकबरी का संक्षिप्त वर्णन करें।

© JCERT not to be republished